प्रश्न-1. ''1857 के बाद ब्रिटिश प्रशासनिक रणनीति में कुछ आधारभूत परिवर्तन किये गये जिसका उद्देश्य ब्रिटिश नियंत्रण को मजबूत करना था।'' इस कथन का विश्लेषण कीजिए। (200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- 1857 के विद्रोह के बाद के दशकों में ब्रिटिश भारत सरकार के ढाँचे और नीतियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गए।

मुख्य विषय वस्तु

- 1858 में ब्रिटिश संसद द्वारा पारित एक कानून ने शासन का अधिकार ईस्ट इंडिया से लेकर ब्रिटिश सम्राट को दिया गया जो पहले कंपनी के डायरेक्टरों और बोर्ड ऑफ कंट्रोल की थी। अब शासन का भार ब्रिटिश सरकार के मंत्री, 'भारत मंत्री', को दे दिया गया। भारतीय प्रशासन पहले की तुलना में और भी प्रतिक्रियावादी हो गया, क्योंकि अब उदारवाद का दिखावा भी धीरे-धीरे बंद कर दिया गया।
- 1861 के इंडियन काउंसिल ऐक्ट के तहत इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल को बड़ा बनाया गया। गैर सरकारी सदस्यों में भारतीय भी हो सकते थें, मगर शक्तिहीन ही। यह नाममात्र की भागीदारी थी।
- प्रांतीय प्रशासन में भी अति-केन्द्रीकरण की बुराई को दूर किया गया। 1870 में लार्ड मेयो द्वारा वित्तीय प्रशासन में बदलाव व लिटन द्वारा इसे और विस्तारित किया गया। स्थानीय संस्थाओं को बेहतर किया गया, ताकि जनसामान्य तक पहुँच व प्रशासनिक एकीकरण हो सके। नगरपालिकाओं, जिला परिषदों आदि में परिवर्तन हुयें।
- सेना में भी यूरोपीय सैनिकों के वर्चस्व को सावधानी से सुनिश्चित किया गया। महत्वपूर्ण विभाग यूरोपीयों के हाथ में ही रखा गया।
- सार्वजनिक सेवाओं में सुधार। आगे के दशकों में धीरे-धीरे प्रशासकीय सेवाओं का भारतीयकरण किया गया। भारतीयकरण से भारतीयों के हाथ में राजनीतिक शक्ति नहीं आई मगर तुष्ट करने का प्रयास किया गया और प्रशासन को मजबूती दी गई।
- प्रशासन में केन्द्रीकरण और विकेन्द्रीकरण के बीच संतुलन बनाने का प्रयास और भारतीयों को कुछ निचले पदों पर शामिल करके एक संदेश दिया गया कि भारतीय भी प्रशासन में भागीदार हैं और उन्हें तुष्ट करके प्रशासनिक नियंत्रण को मजबूत किया गया।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दे।

प्रश्न-2. ''एक राजनीतिज्ञ के रूप में 18वीं सदी के किसी अन्य शासन की तुलना में टीपू कोसो आगे था। टीपू में समझ, दूरदर्शिता, रणनीति एवं साहस था।'' इस कथन का परीक्षण कीजिए।

(200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- मैसूर के इतिहास और 18वीं शताब्दी की भारतीय राजनीति में टीपू ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। टीपू नये विचारों को ढूंढ निकालने वाला व्यक्ति था तथा समय के साथ अपने को बदलने को तैयार रहना उसकी बुद्धिमत्ता का प्रतीक था।

मुख्य विषय वस्तु

- टीपू ने एक राजनीतिज्ञ के रूप में 18वीं सदी के किसी अन्य शासक की तुलना में दक्षिण भारत के लिए और अन्य भारतीय शासकों के लिए अंग्रेजी राज के खतरे को अधिक ठीक तरह से समझा।
- टीपू ने अंग्रेजी राज के वास्तविक खतरे को समझा तथा कूटनीतिक तथा सामरिक समाधान निकालने का प्रयास किया। यूरोपीय प्रणाली के आधार पर सैन्य व्यवस्था का गठन, नौ-सेना का गठन तथा विदेशी शक्तियों से गठजोड़ करने का प्रयास उसकी दूरदर्शिता को दिखाता है। उसने अफगानिस्तान, फ्रांस, ईरान, तुर्की तथा मॉरिशस आदि देशों में दूत-मंडल भेजे। परंतु ये प्रयास मराठा तथा निजाम के साथ नहीं किया। यह भी उल्लेखनीय है कि मराठा तथा निजाम में ऐसी दूरदर्शिता नहीं दिखती कि वे टीपू की योजनाओं को समझ पाते।
- टीपू की दूरदर्शिता का परिचय इससे जाहिर होता है कि फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर उसने श्रीरंगपट्टनम में, 'स्वतंत्रता का वृक्ष' लगाया, जैकोबिन क्लब का सदस्य बना। स्मरणीय है कि स्वतंत्रता का वृक्ष लोक संम्प्रभुता की संकल्पना की ओर टीपू के मुड़ने का प्रमाण है, जिसमें राष्ट्रवाद एवं उदारवाद की संभावना अन्तर्निहित थी।
- टीपू ने राजनीति को अर्थव्यवस्था से जोड़ने का प्रयास किया। जागीरदारी प्रणाली त्यागकर कृषक तथा सरकार में सीधा संपर्क स्थापित किया। वाणिज्य व्यवसाय को व्यापक महत्व दिया। यूरोपीय कंपनी के तर्क पर व्यापारिक कंपनी स्थापित करने का प्रयास किया। विदेशी व्यापार के लिए फ्रांस, तुर्की, ईरान में दूत भेजे तथा चंदन, काली मिर्च, सोने तथा चाँदी के व्यापार पर केवल सरकार का अधिकार रखा।
- नये कैलेंडर लागू करना, सिक्का ढलाई की नई प्रणाली, नाप-तोल के लिए नये पैमाने अपनाना उसे अपने अन्य समकक्षों से पृथक करता है।
- वेलेजली की सहायक संधि को ठुकराना और युद्ध के मैदान में वीरगति पाना (मई,1799) साहस को दर्शाता है। उसका एक कथन इसकी वीरता को प्रमाणित करता है-'' भेंड की तरह लंबी जिंदगी जीने से बेहतर शेर की तरह एक दिन जीना है।''

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दे।

प्रश्न-3. 'एक अंग्रेज विद्वान ने स्वयं स्वीकार किया था कि मैकाले की शिक्षा पद्धति एक दिन ब्रिटिश शासन की कब्र खोदने में सहायक सिद्ध होगी।' उपर्युक्त कथन कितना सत्य सिद्ध हुआ? स्पष्ट कीजिए। **(200 शब्द)**

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- औपनिवेशिक सत्ता के विकास और ब्रिटिश हितों की सुरक्षा के लिए भारतीयों का एक ऐसा शिक्षित वर्ग तैयार करना आवश्यक था, जो पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का हिमायती हो। इसी नीति पर काम करते हुए मैकाले ने 2 फरवरी, 1835 को एक घोषणा पत्र जारी किया जो शिक्षा में कुछ बुनियादी परिवर्तन का धोतक था।

मुख्य विषय वस्तु

प्रथम पैरा

- ''यदि किसी देश को दास बनाए रखना है, तो उसके साहित्य और संस्कृति का विनाश कर देना चाहिए'' इस मंसा से प्रेरित मैकाले ने भारत के भावी शिक्षा के रूप में पाश्चात्य शिक्षा तथा अंग्रेजी भाषा को स्वीकार कर लिया और फिर सरकार ने शिक्षा के प्रसार के लिए ''अधोगामी निस्यंदन सिद्धांत'' का सहारा लिया, क्योंकि सरकार शिक्षा पर बेहद मामूली रकम खर्च करके मुट्ठी भर लोगों को प्रशासन के निचले पदों पर कार्य करने लायक बनाना चाहती थी। कम वेतन पर ये भारतीय उपलब्ध हो सकते थें।
- चूँकि मैकाले का मानना था कि भारतीय भाषाएं अल्पविकसित हैं तथा प्राच्य विद्या यूरोपीय विद्या से बिल्कुल निकृष्ट है इसलिए औपनिवेशिक हित और राजनीतिक, आर्थिक, व्यापारिक लाभ के लिए एक ऐसा वर्ग तैयार करना आवश्यक है जो शरीर से भारतीय मगर आत्मा से अंग्रेज हो तथा धार्मिक रूप से बदलाव भी इसमें निहित था।

द्वितीय पैरा

- मैकाले की शिक्षा नीति से, अंग्रेजी शिक्षित निचले स्तर के सरकारी पदों के कर्मचारी का एक वर्ग तैयार हुआ जो हर दिन प्रशासन में अपने ब्रिटिश समकक्षों की तुलना में भेदभाव झेला, ये भेदभाव उनकी आँखे खोलने का काम किया और आगे वे स्वतंत्रता व आंदोलनकारियों के साथ होते गए।
- चूँकि पाश्चात्य शिक्षा से शिक्षित भारतीय बुद्धिजीवी पश्चिमी उदार मूल्यों के संपर्क में आए और स्वतंत्रता का अर्थ समझे वे राजनीतिक दलों, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तिकओं और सार्वजनिक मंचों के माध्यम से शिक्षित भारतीयों ने ग्रामीण और शहरी जनता के बीच जनतंत्र, राष्ट्रीयता, साम्राज्यवाद विरोधी, आर्थिक समानता, न्याय के विचारों का एहसास कराया।
- ये अंग्रेजी शिक्षित भारतीयों ने ब्रिटिश साम्राज्य को भारतीयों के बीच में एक (कॉमन इनेमी) 'साझा शत्रु' के रूप में दिखाने में सफल हुए और आगे आंदोलन का नेतृत्व किये तथा जनाधार भी बढ़ाते गये। इस तरह ये अंग्रेजी शिक्षित भारतीय योग्य शिष्य सिद्ध हुए।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दे।

प्रश्न-4. ''समाज सुधार के लिए किये गए विधि निर्माण के पीछे औपनिवेशिक हित निहित थें।'' इस कथन को उचित तर्कों के साथ स्पष्ट कीजिए।

(200 शब्द)

मॉडल उत्तर

भूमिका में निम्न बातों को शामिल करें-

- ब्रिटिश साम्राज्य ने अपने औपनिवेशिक हित साधने के लिए समय-समय पर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन किये। 1813 के बाद उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति के रुपांतरण के लिए सक्रिय कदम उठाये।

मुख्य विषय वस्तु-

- औद्योगिक क्रांति के फलस्वरुप औद्योगिक पूंजीवाद के विकास से ब्रिटिश समाज के सभी पहलुओं में तेजी से बदलाव हुए व उदीयमान औद्योगिक हितों की रक्षा के लिए तथा भारत को अपनी वस्तुओं के लिए बड़े बाजार के रूप में बदलने हेतु भारतीय समाज में आंशिक रुपांतरण और आधुनिकीकरण की आवश्यकता थी। इसलिए अंग्रेजों का ध्यान सामाजिक विधि निर्माण की ओर गया।
- रहन-सहन, सोच-विचार व जीवन शैली के नए दृष्टिकोण अपनाने व अंग्रेजी शिक्षा को स्वीकारने के लिए परंपरामुक्त होना अनिवार्य था। चूँकि अंग्रेजी शिक्षित भारतीय ही ब्रिटिश वस्तुओं के उपभोक्ता हो सकते थें इसलिए पुरानी सामाजिक रीतियों को बदलने की आवश्यकता महसूस की गई और विधि निर्माण के जरिये परिवर्तन किया जाने लगा।
- सती प्रथा का उन्मूलन 1829, शिशु हत्या पर पाबंदी तथा 1830 के दशक में उन्हें कड़ाई से लागू करने का प्रयास किया गया। दास प्रथा के उन्मूलन के लिए 1833 के चार्टर एक्ट के अधीन भारत सरकार द्वारा आज्ञा दी गई तथा 1856 में विधवा पुनर्विवाह के लिए कानून बनाया गया। 1891 में एज ऑफ कन्सेंट बिल पास किया गया तथा विवाह की उम्र 12 वर्ष की गई। कुल मिलाकर आर्थिक हितार्थ के लिए सामाजिक बदलाव किये गये ताकि ब्रिटिश शासन को मजबूती मिले।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दे।